(1) सवैया

मानुष हौं तो वही रसखान, बसौं मिलि गोकुल गाँव के ग्वारन।

जो पशु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मझारन॥

पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन।

जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन॥

यह सवैया कृष्ण-भक्ति की पराकाष्ठा का उदाहरण है। कवि अपनी प्रत्येक अवस्था में श्रीकृष्ण के निकट रहने की कामना व्यक्त करते हैं।

व्याख्या

कवि कहते हैं कि यदि मैं मनुष्य बनूँ तो गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच निवास करूँ। यदि पशु बनूँ तो नंद बाबा की गायों के बीच चरूँ। यदि पत्थर बनूँ तो उसी गोवर्धन पर्वत का अंश बनूँ जिसे भगवान कृष्ण ने इंद्र के कोप से ब्रजवासियों की रक्षा हेतु अपनी उँगली पर उठाया था। यदि पक्षी बनूँ तो यमुना तट के कदंब वृक्षों की डाल पर बसेरा करूँ।

यहाँ कवि की भावना यह है कि किसी भी रूप में जन्म मिले, परंतु वह श्रीकृष्ण से दूर न हो। सांसारिक वैभव या उच्च पद की उन्हें इच्छा नहीं, बल्कि ब्रजभूमि में रहने का सौभाग्य ही उनके लिए सर्वोच्च है।

विशेषता

- उत्कट कृष्ण-भक्ति
- पुनर्जन्म की कल्पना के माध्यम से अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति
- ब्रज के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण

अर्थात्

कृष्ण के प्रति रसखान अपने प्रेम की निवेदित करते कहते हैं कि यदि अगले जन्म में मुझे मनुष्य योनि में जन्म लेना हो तो उसी गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच में

रहूँगा।कृष्ण की सेवा मिलती रहे। अगर पशु के रूप में मेरा जन्म होता है तो मैं नंद की गायों के रूप में उनके मध्य रहूँ, ताकि मैं कृष्ण के पास रह सकूँ।

अगर मेरा जन्म पत्थर के रूप में हो तो मैं उसी पर्वत का स्थान बनूँ, जिसे कृष्ण ने इंद्र के प्रकोप से ब्रजवासियों की रक्षा के लिए अपनी उँगली पर उठाया था।यदि मैं पक्षी बनूँ तो यमुना के किनारे जो कदंब का वृक्ष है, उसी पर अपना बसेरा बनाऊँ, क्योंकि डाल के नीचे कृष्ण बाँसुरी बजाया करते थे।इस प्रकार वन-वृंदावन में रसखान का कृष्ण के प्रति अपार प्रेम दिखाया गया है कि वे मनुष्य, पशु, पत्थर अथवा पक्षी–किसी भी रूप में अपने देवता को पास करना चाहते हैं।

(2) सवैया

धूरि भरे अति शोभित श्याम जू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।

खेलत खात फिरैं अंगना, पग पैंजनि बाजति पीरी कछोटी॥

वा छवि को रसखान विलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी।

काग के भाग बड़े सजनी, हरि हाथ सों ले गयो माखन रोटी॥

प्रसंग

इस सवैये में बाल-कृष्ण की मोहक छवि का वर्णन है।

व्याख्या

कवि कहते हैं कि धूल से सने हुए भी श्यामसुंदर अत्यंत शोभायमान लगते हैं। उनके सिर पर सुंदर चोटी बंधी है। वे आँगन में खेलते-खाते घूमते हैं और पैरों में बँधी पायल मधुर ध्वनि कर रही है। उनकी इस मनोहर छवि को देखकर करोड़ों कामदेव भी लज्जित हो जाएँ। अंत में कवि हास्यपूर्ण भाव से कहते हैं कि उस कौए का भाग्य कितना बड़ा है, जो कृष्ण के हाथ से माखन-रोटी छीनकर ले गया।

इस सवैये में वात्सल्य और श्रृंगार का सुंदर समन्वय है। कृष्ण की बाल-लीला का अत्यंत सजीव चित्र उपस्थित किया गया है।

विशेषता

- बाल-लीला का सजीव चित्रण
- रूप-सौंदर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन
- वात्सल्य रस की प्रधानता

बाल कृष्ण ने माखन का भक्षण धूल में लिपट कर किया है। उनके सिर पर चोटी बँधी हुई है। वे अपनी गोपियों को चिढ़ा रहे हैं। श्रीकृष्ण अत्यंत चंचल हैं। मक्खन खाते-खाते खेल रहे हैं। आँगन में घूम रहे हैं। पैंजनियाँ बज रही हैं। पीले रंग के वस्त्र धारण किए हुए हैं। शरीर पर धूल लगी हुई है। वह धूप की भाँति तेजस्वी हैं। अपूर्व सौंदर्य के धनी हैं। इस छवि पर मैं करोड़ों कामदेवों को न्योछावर कर दूँ। कौए का भाग्य कितना अच्छा है कि वह सीधे भगवान के हाथ से माखन-रोटी ले गया। इतना भाग्यशाली दुनिया में कोई भी नहीं है।

(3) सवैया

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठौं सिद्धि नवौं निधि को सुख, नंद की धेनु चराय बिसारौं॥

रसखान सदा इन नैनन सों, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौं॥

प्रसंग

इस सवैये में कवि ने सांसारिक वैभव को त्यागकर ब्रज में साधारण ग्वाले के रूप में जीवन बिताने की इच्छा प्रकट की है।

व्याख्या

कवि कहते हैं कि मैं इस लकुटी (लाठी) और कंबल के बदले तीनों लोकों का राज्य भी छोड़ दूँ। आठों सिद्धियाँ और नौं निधियाँ भी मुझे आकर्षित नहीं करतीं। मैं तो नंद बाबा की गायें चराने का सुख ही चाहता हूँ। कवि की कामना है कि वे सदा अपनी आँखों से ब्रज के वन, बाग और तालाबों को निहारते रहें। वे कहते हैं कि करोड़ों स्वर्ण-मंडित भवनों को भी करील के छोटे-छोटे कुंजों पर न्योछावर कर दूँ।

यहाँ कवि की दृष्टि में ब्रजभूमि का तिनका भी स्वर्ग से श्रेष्ठ है। भक्ति उनके लिए समस्त ऐश्वर्य से बढ़कर है।

विशेषता

- वैराग्य और भक्ति का समन्वय
- ब्रजभूमि की महिमा का गुणगान
- सांसारिक मोह का त्याग

इस पद में दिखाया गया है कि कृष्ण व्रज की गलियों में घूमते हैं और माखन की चोरी करते हैं। वे घर-घर जाकर लोगों का माखन चुराकर खा जाते हैं।आठ सिद्धियाँ–

1. अणिमा
2. महिमा
3. गरिमा
4. लघिमा
5. प्राप्ति
6. प्राकाम्य
7. वशित्व
8. ईशित्व

नौ निधियाँ–

1. पद्म
2. महापद्म
3. शंख
4. मकर
5. कच्छप
6. मुकुंद
7. कुंद
8. नील
9. खर्व

इन सबको प्राप्त करने के बाद भी उस सुख की तुलना नंद की गायों को चराने के आनंद से नहीं की जा सकती । कवि कहते हैं कि वे श्रीकृष्ण की लकुटी (लाठी) और कामरिया (कंधे पर डाला

जाने वाला वस्त्र) पर तीनों लोकों का राज्य भी न्योछावर कर सकते हैं। अर्थात् उन्हें संसार का समस्त वैभव और राजसुख भी तुच्छ प्रतीत होता है।

वे आगे कहते हैं कि आठों सिद्धियाँ और नौं निधियों का सुख भी वे त्याग सकते हैं, यदि उन्हें नंदबाबा की गायें चराने का अवसर मिल जाए। यहाँ कवि का आशय है कि उन्हें आध्यात्मिक शक्तियों या सांसारिक संपत्ति की कोई इच्छा नहीं है; वे केवल ब्रज में श्रीकृष्ण की सेवा करना चाहते हैं।

रसखान कहते हैं कि वे सदा अपने नेत्रों से ब्रज के वन, बाग और सरोवरों को निहारते रहें। ब्रजभूमि का प्रत्येक कण उन्हें अत्यंत प्रिय है।

अंत में वे कहते हैं कि करोड़ों स्वर्ण-मंडित महलों को भी वे करील (कंटीली झाड़ी) के कुंजों पर न्योछावर कर दें। अर्थात् ब्रज के साधारण वन-उपवन भी उनके लिए स्वर्ग और राजमहलों से अधिक प्रिय हैं।

इस सवैये में कवि रसखान ने अपनी अनन्य कृष्णभक्ति, ब्रजभूमि के प्रति अगाध प्रेम तथा वैभव-विलास के प्रति विरक्ति को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। उनके लिए ब्रज का साधारण जीवन भी तीनों लोकों के राज्य से अधिक मूल्यवान है।